8-III
L-31
MIH

रॉलेट कानून एवं रॉलेट सत्याग्रह

कानून :

क्रान्तिकारी गतिविधियों पर नियंत्रण स्थापित करने के उद्देश्य से 1918 में एक रॉलेट समिति बनाई गई और इस समिति के सुझाव पर मार्च 1919 में रॉलेट कानून पारित हुआ।

प्रावधान :-

- संदेह के आधार पर किसी भी व्यक्ति को गिरफ्तार किया जा सकता है।
- मुकदमा चलाए बिना दो वर्षों तक जेल में रखा जा सकता है
- मुकदमा विशेष अदालत में संचालित होगा और इसके निर्णय के विरुद्ध अपील नहीं की जा सकेगी।

सत्याग्रह :

- इस कानून का सभी प्रमुख राष्ट्रवादी नेताओं ने विरोध किया तथा इसे काला कानून कहा।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

Scanned by CamScanner

गाँधी जी ने इस कानून के विरोध के लिए बॉम्बे में सत्याग्रह सभा का गठन किया। गाँधी जी को होमरूल लीग के कार्यकर्ता "फिरंगी महल उलेमा सम्प्रदाय" नामक संस्था (संस्थापक- अब्दुल बारी) का सहयोग मिला।

- 6 अप्रैल 1919 को आन्दोलन प्रारम्भ करने की तिथि निर्धारित की गई इस दिन उपवास रखना, हड़ताल करना और प्रतिबंधित साहित्य संबंधी कानून का विरोध करना था। जैसे- हिन्द स्वराज
- हालाँकि आन्दोलन के दौरान अहमदाबाद, अमृतसर इत्यादि स्थलों पर हिंसात्मक घटनाएँ हुई और 13 अप्रैल 1919 को जालियाँवाला बाग हत्याकांड भी।
- हिंसा को देखते हुए गांधी जी ने आन्दोलन को वापस लेने की घोषणा की।

नोट:-

आखिल भारतीय स्तर पर गांधी जी के द्वारा संचालित यह पहला आन्दोलन था गांधी जी के आह्वान पर पूरे देश में प्रतिक्रिया दिखी हालांकि संगठनात्मक कमजोरी एवं कुछ अन्य कारणों से गांधी जी को आन्दोलन

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

Scanned by CamScanner

वापस लेना पड़ा।

जालियाँवाला बाग हत्याकांड :- 13 अप्रैल 1919

अमृतसर

- बैशाखी का दिन एवं

सत्यपाल तथा सैफुद्दीन कीचलू की गिरफ्तारी के विरूद्ध जालियांवाला बाँग में जब एकत्रित थे।

- पंजाब के लेफ्टीनेंट गवर्नर माइकल डायर (1940 - उधम सिंह)
- सैनिक अधिकारी - जनरल डायर - गोली चलाने का आदेश जारी किया था।
- विरोधस्वरूप - सी. शंकरन नायर ने वायसराय परिषद से त्यागपत्र दिया और रविन्द्रनाथ टैगोर ने "नाइट हुड" की उपाधि छोड़ दी।
- **हंटर समिति** सरकार ने हत्याकाण्ड की जाँच के लिए हंटर समिति का गठन किया और समिति ने सरकारी कार्यवाही को उचित बताया।

कांग्रेस ने भी मालवीय जी की अध्यक्षता में एक जाँच समिति बनाई (गांधी जी इस समिति के सदस्य थे)

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

Scanned by CamScanner

खिलाफत आन्दोलन - 1919 - 1924

क्या है :- खलीफा के सम्मान के लिए चलाया गया आन्दोलन।

Note :- खलीफा इस्लाम में राजनैतिक और धार्मिक प्रमुख माने जाते थे तुर्की में खलीफा का निवास स्थान था और प्रथम विश्वयुद्ध में तुर्की ब्रिटिश विरोधी गुट में शामिल था।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

कारण :-

- विभिन्न कारणों से ब्रिटिश सरकार और रूढ़िवादी मुसलमानों के बीच दूरियाँ बढ़ रही थी जैसे- बंगाल विभाजन रद्द किए जाने, अलीगढ़ महाविद्यालय को अपेक्षित आर्थिक सहायता न मिलने से।
- मुस्लिम समुदाय में आधुनिक शिक्षा का प्रसार एवं आधुनिक विचारों का भी प्रसार हुआ कुछ मुस्लिम नेताओं के द्वारा सरकारी नीतियों की आलोचना की जा रही थी जैसे मौलाना आजाद (अलहिलाल) प्रतिबंधित,

Scanned by CamScanner

मोहम्मद अली - (कामरेड) प्रतिबंधित इत्यादि।

- प्रथम विश्व युद्ध के कारण आम लोगों की दयनीय दशा का मुस्लिम समुदाय पर भी प्रभाव देख सकते हैं।

- कांग्रेस मुस्लिम लीग समझौते से मुस्लिम लीग के कार्यकर्ता भी उत्साहित थे और होमरूल आन्दोलन में भी मुस्लिम नेताओं की भागीदारी दिखी।

- रॉलेट एक्ट जालियाँवाला बाग हत्याकाण्ड इत्यादि घटनाओं से मुस्लिम समुदाय भी आक्रोशित था।

- **गतिविधियाँ :-**

- 1919 में खिलाफत समिति का गठन किया गया, प्रमुख नेता थे - मौलाना आजाद, हसरत मोहानी, हकीम अजमल खाँ, अलीबंधु (मोहम्मद एवं शौकत अली)।

- खिलाफत समिति की प्रमुख माँग थी कि तुर्की के साथ की जाने वाली सन्धि में खलीफा को उचित सम्मान मिले जैसे धर्म स्थलों पर खलीफा का नियंत्रण हो

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

Scanned by CamScanner

खलीफा को रहने के लिए पर्याप्त भू-भाग दिया जाए।

- इस समिति ने भारत एवं ब्रिटिश सरकार को अपनी मॉंगों से अवगत कराया।
- अपनी मॉंगो को लेकर भारत में भी एक जागरूकता अभियान चलाया।
- हालॉंकि तुर्की के साथ की गई संधि की शर्तें जब सार्वजनिक की गईं तब खिलाफत समिति को निराशा हुई।
- इसके पश्चात् 1920 में इलाहाबाद में एक सम्मेलन बुलाया गया और गांधी जी के सुझाव पर 1 अगस्त 1920 से असहयोग आन्दोलन प्रारंभ करने का निर्णय किया गया। (इसी दिन तिलक जी का निधन हुआ)

KCS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

Scanned by CamScanner

कांग्रेस एवं असहयोग आन्दोलन :

- गांधी जी का यह प्रयास था कि कांग्रेस के मंच से इस प्रकार का आन्दोलन संचालित किया जाए। इसी उद्देश्य से गांधी जी के प्रयासों ने सितम्बर 1920 में कलकत्ता में (लाजपतराय अध्यक्ष) कांग्रेस का विशेष अधिवेशन बुलाया गया और कांग्रेस ने कुछ विरोध के साथ असहयोग आन्दोलन प्रारंभ करने का प्रस्ताव पारित किया लेकिन अंतिम निर्णय वार्षिक अधिवेशन पर छोड़ दिया गया।
- विरोधियों का नाम- लाजपत राय, (देशबंधु) चितरंजन दास, एनीबेसेंट एवं मालवीय जी

- दिसम्बर 1920 नागपुर - वी. राघवाचारी अध्यक्ष

(i) असहयोग संबंधी प्रस्ताव पारित हुआ इसे चितरंजन दास ने पेश किया था।

इस प्रस्ताव के दो पहलू थे

(1) विरोधात्मक — ब्रिटिश वस्तुएँ व सरकारी संस्थाओं का बहिष्कार।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

Scanned by CamScanner

(ii) रचनात्मक ⇒

- छूआछूत का विरोध, खादी का प्रचार, हिन्दू मुस्लिम एकता का समर्थन, स्वच्छता पर बल, महिलाओं की दशा में सुधार मद्यपान का विरोध इत्यादि।

(रचनात्मक कार्य आन्दोलन के पश्चात भी जारी रहेंगे।

(ii) कांग्रेस के संगठनात्मक ढांचे में परिवर्तन :-

(गाँधी जी के सुझाव पर)

- पदसोपान पर आधारित केन्द्र से लेकर स्थानीय स्तर तक एक संगठनात्मक ढांचा निर्मित किया गया तथा कांग्रेस को प्रतिदिन कार्य करने वाली संस्था के रूप में स्थापित किया गया।
- 15 सदस्यीय कांग्रेस वर्किंग कमेटी बनाई गई।
- 350 सदस्यीय आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी का गठन किया गया।
- प्रांतीय एवं जिला स्तर पर भी कांग्रेस समितियाँ बनाई गई, सदस्यता शुल्क के लिए 25 पैसे निर्धारित किए गए।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

Scanned by CamScanner

(iii) जहाँ तक सम्भव हो कांग्रेस हिन्दी का सम्पर्क भाषा के रूप में उपयोग करेगी और प्रांतीय कांग्रेस समिति क्षेत्रीय भाषा का उपयोग कर सकती है।

(iv) देशी रियासतों की जनता को लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए आन्दोलन करना चाहिए लेकिन कांग्रेस के नाम पर आन्दोलन का संचालन न करें।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Scanned by CamScanner